POLITICAL SCIENCE Dep.
BA-I
Next-2

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor, Dr. L.K.V. D. College
Tajpur, Samastipur

सर्वप्रथम गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार को याचिकायें एवं प्रार्थना-पत्र भेजने की नीति अपनाई। उन्होंने ब्रिटेन को भी इस संबंध में अनेक प्रार्थनापत्र भेजे। उन्होंने ब्रिटेन से मांग की कि वह इस विषय पर हस्तक्षेप कर भारतीयों की दशा सुधारने का प्रयत्न करे क्योंकि भारत, ब्रिटेन का उपनिवेश है। गाँधीजी ने सभी भारतीयों को संगठित कर "नेटल भारतीय कांग्रेस" की स्थापना की तथा "इंडियन ओपीनियन" नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।

गाँधीजी के प्रयासों एवं कई दौर की ब्रिटिश सरकार से लंबी बातचीत के पश्चात् दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने भारतीयों की कई मुख्य मांगें मान लीं। भारतीयों को उनके रीति-रिवाजों से विवाह करने की छूट प्रदान की गई तथा भारतीय अप्रवासियों की अन्य कठिनाइयों पर दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

गाँधीजी द्वारा भारत में किया गया आंदोलन :-

दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी के संघर्ष और उनकी सफलता ने उन्हें भारत में अत्यंत लोकप्रिय बना दिया। न केवल शिक्षित भारतीय

Scanned with CamScanner

अपितु जनसामान्य भी गांधीजी के बारे में भलीभांति परिचित हो चुका था। गांधीजी ने निर्णय लिया कि वह अगले एक वर्ष तक समूचे देश का भ्रमण करेंगे तथा जनसामान्य की यथास्थिति का स्वयं अवलोकन करेंगे। गांधीजी ने राष्ट्रवादी लक्ष्यों को प्राप्त करने का सर्वोत्तम मार्ग - अहिंसक सत्याग्रह को माना।

चंपारण सत्याग्रह (1917)

चंपारण में किसानों को अपनी भूमि के 3/20वें हिस्से में नील की खेती करना अनिवार्य एक अनुबंध द्वारा गोरे बागान मालिकों ने करा लिया था। किसान नील की खेती से छुटकारा पाना चाहते थे। गांधीजी, राजेंद्र प्रसाद, बृज किशोर, मजहर-उल-हक, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, जे. बी. कृपलानी के सहयोग से मामले की जांच करने चम्पारण पहुंचे। गांधीजी के अडिग प्रयास से तिनकठिया पद्धति समाप्त करने पर सरकार राजी हुई। इसप्रकार गांधीजी ने भारत में सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रथम युद्ध सफलतापूर्वक जीत लिया।

अहमदाबाद मिल आंदोलन (1918)

चम्पारण के पश्चात् गांधीजी ने मार्च 1918 में अहमदाबाद मिल हड़ताल के मुद्दे पर सत्याग्रह किया।

Husna Ara
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College

Scanned with CamScanner